Page No. :
Date : / /

क्र. नाखुन क्यों बढ़ते है? इस निबंध का आशय बताइए

→ नाखुन क्यों बढ़ते है? यह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीजीका निबंध है। इस निबंध में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है की नाखुन बढ़ाना पशुता की निशानी है जो हिंसा का प्रतीक है। मनुष्य अहिंसा का पालन करनेवाला होता है। द्विवेदीजीके निबंध का विवेचन निम्नलिखित है।

① लड़की का प्रश्न :— आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीजी की बेटी ने अपने पापा से प्रश्न पुछा। मनुष्य के नाखुन काटने पर हर तिसरे दिन नाखुन क्यों बढ़ते है? द्विवेदीजी इस प्रश्न का उत्तर उस समय नहीं दे पाए।

② शस्त्र के रुप में प्रयोग :— मनुष्य ने पहले शस्त्र के रुप में नाखुन का प्रयोग किया। जीवन रक्षा के लिए नाखुन बढ़ाना आवश्यकता बन गई थी। मनुष्य का जीवन भी जंगलीय था।

③ शस्त्र का विकसीत रुप :— जैसे-जैसे मनुष्य का विकास होता गया वैसे - वैसे शस्त्र में भी विकास होता गया। पहले नाखुन, उसके बाद पेड़ की डाले, पत्थर, हड्डियां का प्रयोग शस्त्र के रुप होता था। अब बंदुक, कारतुस, तोफ आदि नए रुप में विकसीत हुए है।

④ नाखुन को गाली :— आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी नाखुन को गाली देते है कहते है बार-बार काटने पर निर्लज्ज की भांती बार-बार आते है। उनको नहीं मालुम की मनुष्य के पास धार-धार शस्त्र आया हुआ है, कमबख्त की भांती आ जाता

Page No. : VEDHA
Date : / /

(5) नाखुन काटने की कला :—

बाल की तरह मनुष्य नाखुन को भी अलग-अलग शेप में काटता है कभी वह त्रिकोण, वर्तुलाकार, चंद्राकार, धनुष आदि।

(6) नाखुन बढ़ना सहजात प्रवृत्ति :—

दाँत, पलक, बाल और नाखुन यह मनुष्य शरीर में सहज आते है उसके लिए किसी प्रयास की जरुरत नहिं है।

(7) नाखुन बढ़ाना पशुता की निशाणी :—

नाखुन बढ़ना हिंसा का प्रतीक है यह हिंसा पशु में हम दिखाई देती है मनुष्य मानवीयता का धर्म निभानेवाला है इसलिए मनुष्य ने नाखुन बढ़ाना नहिं चाहिए।

(8) मानवीय जीवन :—

देश में अनेक जातियाँ है अनेक जीव-जंतु है मगर इनमें मानवीय जीवन श्रेष्ठ है आहार, निद्रा, स्वभाव, संयम, सुख-दुःख में संवेदनशील, श्रद्धा, तप, त्याग आदि से मनुष्य जीवन अलग है।

(9) मानवीय सुख :—

कोई वर्ग कहता है की उत्पादन बढ़ाओ, मशीनें बैठाओ, धन की वृद्धि करो तब आपको सुख मिलेगा, कोई कहता है इस बाह्य साधनों की जगह मन में जो हिंसा, द्वेष, तिरस्कार भरा है वहां प्रेम भरो मानवीय जीवन सुखमय होगा।

(10) मनुष्य की सफलता :—

मनुष्य का जीवन परस्पर प्रेम में, मैत्री में, त्याग में है

सभी का मंगल सोचेंगे तो मनुष्य का जीवन सफल है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नाखून बढ़ाना पशुता की निशानी है इसलिए मनुष्यों को नाखून बढ़ाना नहीं चाहिए।